पलाश (कमरकस) गोंद का सतत् विदोहन, प्राथमिक प्रसंस्करण, श्रेणीकरण एवं विपणन

प्रस्तावना – पलाश *Leguminosae* कुल का सदस्य हैं और हिमालय क्षेत्र को छोड़कर लगभग पूरे भारत में पाया जाता है। यह पलास, ढाक, खाकरा, आदि नामों से भी जाना जाता है । यह मध्यम आकार का वृक्ष है जिसकी ऊँचाई 10 15 मी. तक होती है। इसकी छाल का रंग हल्का भूरा या स्लेटी रंग का होता है। गर्मी के मौसम में इसमें लाल एवं नारंगी रंग के फूल खिलते है। इस कारण इसे *Flame of the Forest* भी कहते है।

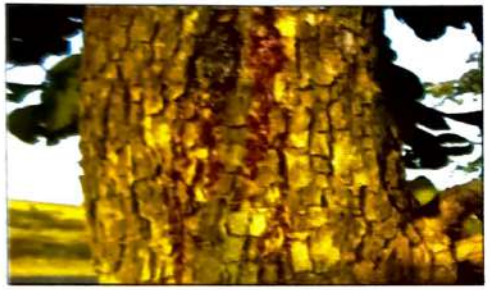

मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ मे किसानों द्वारा पलाश के वृक्षों को खेत की मेढ़ / बंधान पर भी लगाया जाता है। इससे प्राप्त होने वाली गोंद एवं जलाऊ लकड़ी किसानों की आजीविका का अच्छा स्त्रोत है। होली के त्योहार मे इसके फूलों से रंग बनाया जाता है। इसकी गोंद को "कमरकस" एवं बंगाल काइनों भी कहते हैं।

गोंद एवं छाल दोनों में काइनों टेनिक अम्ल पाया जाता है,इसके अतिरिक्त 50%गेलिक अम्ल भी पाया जाता है।इसके बीजों में काइनों तेल पाया जाता है। ताजें बीजों में प्रोटियोलिटिक और लिपोलिटिकएन्जाइम एवं पुष्पों में ब्युटिन ब्युट्रिन तथा अन्य ग्लूकोसाइड पाये जाते हैं।

उपयोग–पलाश का गोंद स्वाद में कड़वा चरपरा तथा कसैला होता है। इससे प्राप्त होने वाली गोंद में टेनिन और लसलसा पदार्थ होता है। जिसके औषधीयगुण के कारण इसका उपयोग पेचिश में होता है। इसके अलावा प्रसूति के उपरांत माताओं को इसके गोंद के लड्डू बनाकर खिलाया जाता है। इसके बीज का उपयोग पेट के कृमि निवारण में होता है। आयुर्वेद में पलाश बिजादि चूर्ण और पलाश क्षार घृत नामक दवाईयां बनाई जाती हैं।

पारंपरिक विदोहन – वृक्ष से गोंद निकालने के लिए पेड़ के तने पर मात्र इतना गहरा तिरछा खांचा लगाया जाता है कि उसकी छाल पूरी तरह निकल जाए। खॉचा लगाने के बाद गोंद निकलने लगता है। इसके 2–3 दिन बाद इन खॉचो को और गहरा किया

विदोहन का गलत तरीका

जाता है और प्रतिदिन गोंद निकाला जाता है। असंख्य खॉचों एवं अत्यधिक गहराई के कारण कभी कभी वृक्ष सूख जाते है। इसका गोंद दिसम्बर से मार्च तक निकाला जाता है।

आधुनिक विधि

- 80 से.मी. से ज्यादा गोलाई मोटाई वाला ही वृक्ष चयन करे।
- गोंद निकलने की जगह को साफ करें।
- धारदार औजार की मदद से 10 से.मी. लंबा और 1 से.मी. चौड़ा चीरा लगाना है, जिसकी गहराई – 0.26 होनी चाहिये।

- पहले चीरे से दूसरे चीरे की दूरी 20 से.मी. रखे।

- खॉचे के एक छोर में प्लास्टिक का पाइप लगा देते है ताकि गोंद रिसकर उस पर आ जावे।
- तने की मोटाई के अनुसार चीरे की संख्या निधारित होती है ।

गोंद को पॉलीथीन शीट से निकालकर किसी पात्र में रखकर धूप में सुखा लिया जाता हैं।

श्रेणीकरण– श्रेणीकरण वह प्रकिया है जिसके अतर्गत उत्पादों को उनकी गुणवत्ता, रंग, आकार, वजन, स्वाद, उपयोगिता एवं मांग आदि के आधार पर विभाजित किया जाता है। गोंद को वृक्ष से निकालने के बाद टोकनी में रखकर अच्छी तरह सुखा लिया जाता हैं। उसके बाद गोंद से अवांछित पदार्थ जैसे मिट्टी, पत्थर, छाल आदि को निकाल लिया जाता है एवं रंगों के आधार पर दो श्रेणियाँ बना ली जाती है। ग्रेड । लाल एवं ग्रेड़ –।। भूरा, काला छाल मिला हुआ।

ग्रेड I ग्रेड–II

प्रसंस्करण एवं भंडारण– गोंद को अच्छी तरह सुखाने और श्रेणीकरण के उपरांत उसको नमी रहित प्लास्टिक के थैलों में रखना चाहिए , फिर जूट या कपड़े के थैलों में भरकर साफ व नमी रहित जगह में रखना चाहिए।

विपणन गोंद के मूल्य में लगातार वृद्धि हो रही है। अतः गोंद का संग्रहण आजीविका का एक अच्छा स्रोत बन सकता है। गोंद के संग्रहण, प्रसंस्करण व मूल्य संवर्धन हेतु ग्रामीण स्तर पर रोजगार मिल सकता हैं। विगत वर्षों में कमरकस गोंद के बाजार में वृद्धि निम्नानुसार है

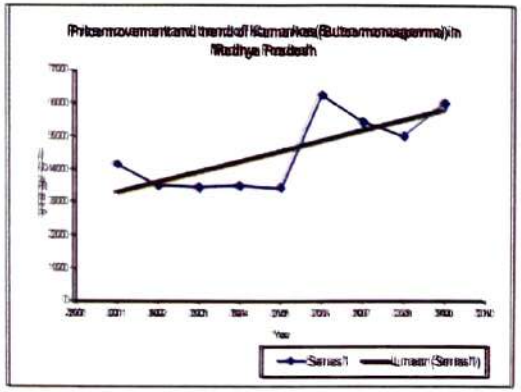

रोपणी एवं रोपण तकनीक बीजों को 25–30 सें. मी. की दूरी पर उभरी हुई क्यारियों में जून माह में बोया जाता है। बीजों का अंकुरण, लगभग 10–12 दिनों से शुरू होकर चार सप्ताह में पूरा हो जाता हैं। नये बीजों की अकुरण क्षमता पुराने बीजों की अपेक्षा अधिक होती है। अंकुरण के एक वर्ष पश्चात पौधो को जमीन से निकालकर वृक्षारोपण क्षेत्र में रोपित किया जा सकता है।

संपर्क
डॉ. प्रतिभा भटनागर एवं मनीष गोस्वामी
राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म. प्र.)
फोन नं 0761. 2665540, 2666529

पलाश (कमरकस)

(Butea monosperma)

सामाजिक आर्थिक एवं विपणन धारवा
राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म. प्र.)